चतुर्थ अध्याय

''सुशीला टाकभौरे की कहानियों में चित्रित समस्याएँ''

सुशीला टाकभौरे की कहानियों में चित्रित समस्याएँ

दलित आंदोलन से जुड़ी महिला लेखिकाओं में सुशीला जी का नाम उल्लेखनीय है। दलितों पर सदियों से होते आए अन्याय, अत्याचार, शोषण और पीड़ा का चित्रण सुशीला जी ने अपनी कहानियों में किया है। उन्होंने अपने साहित्य के माध्यम से दलितों को अन्याय के खिलाफ लड़ने तथा उनके मन में नई चेतना का निर्माण किया है। उनको वर्तमान स्थिति का अहसास दिलाकर उन्हें सही दिशा दिखाने का प्रयास किया है।

आज भी दलित समाज में अधिकांश लोग अनपढ़, बेरोजगार तथा व्यसनाधीन है। परिणामस्वरूप वे गरीबी का शिकार बने हुए हैं। ये लोग विज्ञान, आधुनिकता तथा परिवर्तनवादी विचारों से परे रहते हैं। जिसके कारण वे अपने अधिकारों को समझ नहीं पाते। उनकी बुराईयाँ इस समाज को सीमित घेरे के अंधेरे से न बाहर आने देती हैं और न ही विकास की ओर बढ़ने देती हैं। अतः उन्हें अपनी उन्नति के लिए अपने समाज की बुराईयों को मिटाने का प्रयास करना चाहिए। लेखिका कहती है - "जो दर्द अपने शरीर का हो, वह अपना होता है, उसके लिए केवल दया, सहानुभूति नहीं बल्कि तुरंत उपचार की आवश्यकता है। उपचार के पहले यह जानना जरूरी है कि आखिर मर्ज क्या है और इसका इलाज कैसे किया जा सकता है।"[1]

सुशीला जी की कहानियों में नारी मन का अंतर्द्वंद्व भी चित्रित है। दलित समाज और नारी दोनों की स्थिति शोषण और अन्याय के कारण सदियों से पिछड़ी रही है। साहित्य में अनेक वाद, प्रवृत्तियाँ आई, कई साहित्यिक आंदोलन चले, साहित्य के माध्यम से नए विचार-प्रवाह आए, फिर भी दलित समाज और नारी की स्थिति पिछड़ी रही है। अज्ञान, अशिक्षा, शोषण और अन्याय-अत्याचार की शिकार दलित नारी ही बनती है। इन सभी बातों को सामान्य तौर पर सवर्ण समाज की नारी अथवा पूरे नारी समाज में देखा जा सकता है।

बदलती सामाजिक मान्यताओं और पारिवारिक आर्थिक जरूरतों को देखकर नारी शिक्षित हो रही है। नौकरी करके आत्मनिर्भर बनी है, परिवार के पुरुषों की सहयोगी बन रही है। फिर

भी सही मायने में समाज में उसे समता और सम्मान का अधिकार नहीं मिल रहा है। वह अगर विरोध और संघर्ष का रास्ता छोड़कर हर स्थिति में चुप रहकर समझौता करती है, तब उसे मानसिक रूप से पीड़ा, वेदना, बंधन और विवशता की स्थिति में जीना पड़ता है। बचपन से विकलांग बनाई गई उसकी मानसिकता उसे आगे बढ़ने का साहस नहीं दे पाती है।

सुशीला जी ने अपनी कहानियों में दलित समाज की समस्याएँ और नारी की विवशता का चित्रण किया है। उनकी कहानियों में चित्रित समस्याएँ निम्नप्रकार हैं -

4.1 दलितों की समस्याएँ -

दलितों के सामने अनेक प्रकार की समस्याएँ हैं, जैसे आर्थिक विपन्नता, अशिक्षा, बेरोजगारी, गरीबी, छुआछूत, जातिभेद, असमानता आदि। लेखिका ने दलितों की इन समस्याओं का चित्रण अपनी कहानियों में किया है। दलित समस्याएँ निम्नप्रकार हैं -

4.1.1 छुआछूत की समस्या -

प्राचीन काल से दलितों को अस्पृश्य माना गया है। दलितों को सार्वजनिक कुएँ, तालाब से पानी लेना, पीना मना था, जबकि उस तालाब से जानवर तक पानी पीते थे। सवर्णों के घर के अंदर तो दूर, उनके मुहल्लों में चलने के लिए भी पाबंदी थी। भारतीय संविधान के अनुसार यह अस्पृश्यता नष्ट की गई। परंतु आज भी हमारे देश में छुआछूत की भावना कायम है।

'मंदिर का लाभ' कहानी में एक ही भगवान को माननेवाले सवर्ण और अछूतों के बीच जातिभेद और छुआछूत की भावना का चित्रण है। इसमें नानी राधा-कृष्ण का मंदिर बनवाती है। परंतु मंदिर में भगवान की मूर्ति की स्थापना के लिए पुजारी साफ इन्कार कर देते हैं। एक पुजारी कहता है - ''शास्त्रों में कहीं लिखा है कि तुम्हारी जाति के लोग मंदिर बनवाए और भगवान की स्थापना करें, तुम लोगों ने बड़ा पाप किया है - भगवान को भी अपवित्र कर दिया है। हम ऐसे काम में तुम्हारा साथ नहीं दे सकते और फिर तुमने सोच कैसे लिया कि हम तुम्हारे घर और तुम्हारे मंदिर में आकर पूजा करेंगे ? राम-राम, हे भगवान, बहुत पाप बढ़ गए हैं, इसीसे तुम्हारी मति मारी गई। तुम्हारा तुम जानो, हमारे आने की राह मत देखो, जो दिखता है जो समझ में आता है, खुद कर लो।''[2] एक पंडित सामान्य

तरीके से मूर्ति की स्थापना करता है और जाते समय लोटे का पानी सभी वस्तुओं पर और स्वयं पर छिड़ककर पवित्र होता है।

'टूटता वहम' कहानी में लेखिका अपनी सहेलियों को अपने घर खाने पर बुलाती है। परंतु वे विभिन्न कारण बताकर बात टाल देती है। घर में खाना-खाने केवल चार सहेलियाँ आती हैं। उनमें से दो की चतुर्थी थी, खाने पर दलित समाज की सिर्फ दो ही थी।

'सिलिया' कहानी में मालती को बहुत प्यास लगती है। वह कुएँ से पानी निकालकर पीती है। कुएँ के पास रहनेवाली बकरीवाली मालती और उसकी माँ को बहुत डाँटती है। वह चिल्लाकर सारा मुहल्ला इकठ्ठा करती है - ''अरी बाई, दौड़ो री, जा मोड़ी को समझाओ, देखो तो मना करने के बाद भी कुएँ से पानी भर रही है - हमारी रस्सी बाल्टी खराब कर दई जाने.....''[3]

इस प्रकार सवर्ण लोग ऊपरी तौर पर कहते हैं - हम जातिभेद नहीं मानते, अस्पृश्यता और असमानता नहीं मानते। परंतु उनका आचरण इसके विपरीत दिखाई देता है। इस छुआछूत की अमिट भावना को मिटाने के लिए दलितों को संघर्षशील होना आवश्यक है।

4.1.2 जातिभेद की समस्या -

यद्यपि आज यह नहीं कहा जा सकता कि समाज से जातिभेद की भावना पूरी तरह से मिट गई है। आज भी ये जातिवाद के बंधन काफी सदृढ़ हैं। ''जाति-पाँति या वर्णव्यवस्था को जन्म के आधार पर स्वीकार नहीं करना चाहिए, क्योंकि मनुष्य मात्र की एक ही जाति है। गुण, कर्म और स्वभाव के अनुसार ही मनुष्य उँच-नीच होता है। अत: मनुष्य को अपने कर्म अच्छे बनाने का प्रयत्न करना चाहिए।''[4] परंतु जाति का प्रभाव इतना व्यापक और गहरा है कि समाज में व्यक्ति की पहचान उसके गुण, कर्म, योग्यता या व्यवसाय से न होकर उसकी जाति से होती हैं। आज भी हर जगह, हर स्तर पर किसी-न-किसी रूप में जातीयता विद्यमान है।

'सिलिया' कहानी में सिलिया अपनी सहेली के साथ उसकी बड़ी बहन के घर गई थी। बहन की सास हाथ में पानी का गिलास रखकर सिलिया की पूछताछ करती है। सिलिया की जाति का नाम सुनते ही वह चौंक जाती है।

'धूप से भी बड़ा' कहानी में रोमा उच्च वर्ण, संपन्न तथा बड़े घर की बेटी है। सुनील पिछड़े वर्ग का डॉक्टर है। वह रोमा से बहुत प्रेम करता है। परंतु रोमा उसके प्रेम को स्वीकार नहीं करती है। वह सुनील को शूद्र और परंपरावादी मानती है। जातिवादी विचारों के कारण वह सुनील के गुणों को समझ नहीं सकती है।

सामाजिक समता तथा प्रगतिशीलता के लिए जाति का ध्वंस करना आवश्यक है। इस जातिभेद की भावना से दलित जनता को मुक्त होना चाहिए। जाति-व्यवस्था के कारण अधिकतर नुकसान दलितों का हुआ है। इसलिए इस व्यवस्था का तीव्र विरोध करना उचित है।

4.1.3 अशिक्षा की समस्या -

शताब्दियों से दलितों के पिछड़ेपन का कारण उनका अशिक्षित होना है। इस समाज में आज भी शिक्षा की कमी महसूस होती है। शिक्षा के अभाव के कारण वे न कभी अपने अधिकारों को समझ सकें, न उनकी प्राप्ति के लिए आवाज उठा सकें। न ही वे अपने शोषण के कारणों की पड़ताल कर सके और न उससे मुक्ति पाने के लिए संघर्ष कर सके। शोषण का आधार क्या है यह जाने बिना संघर्ष नहीं किया जा सकता। यह ज्ञान शिक्षा से ही प्राप्त हो सकता है। जीवन की लड़ाई को लड़ने के लिए शिक्षा ही सबसे ज्यादा मारक और शक्तिशाली अस्त्र है। ये लोग अपने बच्चों के बारे में गंभीरता से सोचते नहीं हैं। अत: बच्चे होशियार और बुद्धिमान होकर भी कुछ नहीं कर पाते।

'नयी राह की खोज' कहानी में रामचंद अनपढ़ है। वह अपने बेटे लालचंद को अंग्रेजी कॉन्वेंट स्कूल में भेजता है। मगर घर में सभी अनपढ़ होने के कारण उसका आगे विकास नहीं हो पाता है। परिणामस्वरूप उसे पाँचवी कक्षा से फिर कारपोरेशन की हिंदी प्रायमरी स्कूल में दाखिल किया जाता है। उसे हिंदी अच्छी तरह से न आने के कारण वह स्कूल से भागने लगता है। अत: वह मैट्रिक भी नहीं कर पाता। घर में सभी कहते हैं - "अरे आगे चलकर तो बाप का ही काम करना है। क्या जरूरत है अंग्रेजी पढ़ाई लिखाई की। साँब बाबू की नौकरी हम लोगों के नशीब नें कहाँ होती है।"[5]

इस प्रकार अछूत बच्चों की पढ़ाई अधूरी रहती है। घर का वातावरण और अर्थाभाव इन बच्चों को आगे पढ़ने नहीं देते हैं। अत: इन लोगों को शिक्षा के माध्यम से अन्याय और असमानता के खिलाफ संघर्ष करने के लिए प्रोत्साहित करना मुश्किल है।

4.1.4 शोषण की समस्या -

दलितों के ऊपर सदियों से अन्याय-अत्याचार होते आ रहे हैं। आज भी यह समाज अन्याय, शोषण, दुख, पीड़ा और वेदना की चक्की में पिस रहा है, क्योंकि आज भी जातिवादी भावना की जड़े मजबूत हैं। सवर्ण लोग उनको अपने समान न मानकर वर्णभेद को किसी-न-किसी रूप में बनाए रखना चाहते हैं। दलित समाज के लोग सवर्ण समाज के मोहल्ले में नहीं रह सकते, उनसे कोई व्यवहार नहीं कर सकते। वे जातीय बंधन में जखड़े हुए होते हैं। इस समाज के लोगों के व्यवसाय की ओर भी उपेक्षा से देखा जाता है। ये लोग निम्न स्तर का काम करने में बुराई नहीं मानते। बस बाप-दादा करते हैं, इसलिए हम भी कर रहे हैं, यह विचार-पद्धति उन्हें अधिक सोचने नहीं देती है। ये लोग इसी रोजगार से चिपके रहते हैं।

'मेरा समाज' कहानी में लेखिका ने दलित समाज के पिछड़ेपन का चित्रण किया है। इस समाज के लोग कहते - "इससे अच्छा तो हमारा काम है, खर्र-खर्र दो-चार हाथ मारे कि काम खत्म। न कोई बोलनेवाला, न कोई बातें सुनानेवाला। हम तो अपने ही काम में खुश हैं।"[6] इस समाज के लोग पंचायत में नौकरी करते हैं। कोई अस्पताल में काम करता है, तो कोई किसी स्कूल में सफाई का काम करता है। ऐसा काम करने में इन लोगों को घृणा नहीं होती। उनकी इस स्थिति का फायदा उच्च वर्ग तथा बड़े लोग उठाते हैं, और उनका शोषण करते हैं। अत: इस समाज के लोगों को शोषण के खिलाफ संघर्ष करना आवश्यक है। अन्यथा सदियों तक यह समाज शोषण की चक्की में पिसता रहेगा।

4.1.5 व्यसनाधीनता -

व्यसनाधीनता दलित वर्ग की सबसे बड़ी कमजोरी है। इसका शिकार होकर वे न केवल सवर्णों की सतत गुलामी में रहते हैं बल्कि स्त्रियों, बच्चों पर अन्याय भी करते हैं। अपनी दिनभर की कमाई शराब में उड़ाते हैं। शराब की लत तथा आपसी झगड़ा इस समाज की सबसे बड़ी खराबी है। इस समाज को सुधारना है तो इन लोगों को नशाखोरी से अलग करना होगा। इन सब बुराइयों को छोड़कर ही समाज आगे बढ़ेगा।

'मेरा समाज' कहानी में लेखिका ने कहा है कि ये लोग अपनी शराब के खर्च के लिए अपने बीवी तथा बच्चों को मजदूरी करने के लिए भेजकर स्वयं दिन-रात शराब के नशे में मस्त रहते हैं।

'धूप से भी बड़ा' कहानी में रोमा और बंटी दोनों प्रेम-विवाह करते हैं। परंतु शादी के बाद कुछ ही दिनों में बंटी शराब पीने लगता है। शराब के नशे में रोमा को गालियाँ देता है, उसको मारपीट भी करता है। रात-रात घर नहीं आता है। वह शराब के कारण अपनी बनी-बनाई गृहस्थी उजाड़ देता है।

इस प्रकार ये लोग जब तक शराब को छोड़ने का विचार नहीं करते तब तक वे आगे नहीं बढ़ सकते हैं और न ही सुधार सकते हैं।

4.1.6 आत्मविश्वास की कमी -

दलित समाज के लोगों में आत्मविश्वास की कमी दिखाई देती है। इसी कारण वे हमेशा स्वयं को निम्न और हीन मानते हैं। इन लोगों में आत्मविश्वास तथा विचारों में परिवर्तन होना जरूरी है।

'मेरा समाज' कहानी में कहा है, अछूतों में संकोच, शर्म तथा पीछे रहने की भावना, जातिबोध का दुख, अपमान और भय हमेशा रहता है, जो सर्वगुण संपन्न व्यक्ति होने के बाद भी उनमें पूर्ण आत्मविश्वास जागने नहीं देता। साथ ही अन्याय का डटकर सामना करने की हिम्मत पैदा होने नहीं देता है। इस समाज के लोगों को कोशिश करनी चाहिए कि सम्मान और अपमान के भेद को समझे और सही रूप में सम्मान का हकदार बनें। अत: इन लोगों को अपने बलबूते पर स्व-उद्धार करना आवश्यक है।

'सिलिया' कहानी में सार्वजनिक कुएँ का पानी पीने के कारण बकरीवाली बाई मालती को बहुत डाँटती है। उसकी माँ मालती को बहुत मारती है। सिलिया यह सब देखती है परंतु संकोच के कारण वह कुछ भी बोल नहीं पाती है।

4.1.7 आर्थिक विपन्नता -

समाज में अर्थ का महत्त्वपूर्ण स्थान है। परिवार में जो संघर्ष होते हैं, वे अधिकतर आर्थिक विपन्नता के कारण ही होते हैं। किसी भी अर्थव्यवस्था का परिदृश्य मुख्यत: आर्थिक कारणों से ही संचालित होता है। अर्थ और अर्थव्यवस्था द्वारा ही समाज के व्यवहार, संबंध, रिश्ते आदि सभी कुछ निर्धारित होते हैं। आर्थिक दृष्टि से असमानता के कारण कोई अमीर तो कोई गरीब दिखाई देता है। ''मनुष्य की आर्थिक असमानता ही मुख्य रूप से सामाजिक विभेद को प्रभावित करती है।''[7] अर्थ के कारण ही समाज में तीन वर्ग बने हैं - उच्च, मध्य और निम्न।

आधुनिक युग में कुछ लेखकों ने आर्थिक समस्या को केंद्र मानकर रचनाएँ की हैं। आर्थिक समस्या के अंतर्गत उच्च, मध्य तथा निम्न वर्ग की आर्थिक स्थिति को लिया जाता है। उसके साथ-साथ बेकारी की समस्या, गरीबी आदि का भी अंतर्भाव होता है। लेखिका ने अपने साहित्य-सृजन के लिए मुख्य रूप से निम्न वर्ग को अपनाया है। उनकी कहानियों में निम्न वर्ग की आर्थिक कठिनाइयाँ और उससे उत्पन्न समस्याओं का यथार्थ चित्रण हुआ है।

'नयी राह की खोज' कहानी में रामचंद का बेटा लालचंद अंग्रेजी कॉन्वेंट स्कूल में पढ़ता है। अंग्रेजी की चार कक्षा पास होता है। परंतु स्वार्थ बढ़ने के कारण महंगी किताब-कापिया, स्कूल की फीस, ट्यूशन की फीस आदि का खर्चा घरवाले उठा नहीं पाते हैं। कभी कर्ज लेकर और कभी कोई गहना गिरवी रखकर लालचंद की पढ़ाई चलती है। परंतु आगे की पढ़ाई के लिए इतना खर्च उठाया नहीं जाता। इस बात को लेकर घर में घंटों बहस होती है, माँ कहती - ''और भी तो बच्चे हैं अपने, क्या उन्हें जहर दे दें, आगे की पढ़ाई कठिन है, हिंदी में ही पढ़ लेगा।''[8] अत: लालचंद को कारपोरेशन की हिंदी प्रायमरी कक्षा पाँचवी में भेजते हैं। लालू एक होशियार लड़का होकर भी आर्थिक विपन्नता के कारण आगे की पढ़ाई नहीं कर सकता है।

'मेरा समाज' कहानी में लेखिका ने बताया है कि दलित समाज के लोग सुबह आठ बजे तक बिस्तर में पड़े रहते हैं और पत्नी या बच्चों को अपनी मजदूरी के लिए भेज देते हैं। ये बच्चे सफाई का काम भी करते हैं। घर का वातावरण, किताब-कापियों का अभाव, व्यसनार्धीनता आदि इन

बच्चों को मज़दूरी करने के लिए मजबूर करते हैं। घर की जरूरतों और खर्चा देखकर उनकी पढ़ाई जल्दी ही बंद कर दी जाती है और उन्हें परंपरागत काम पर लगाया जाता है।

इस प्रकार लेखिका ने दलित वर्ग का आर्थिक जीवन एवं समस्याओं का सूक्ष्मता से चित्रण किया है।

4.1.8 धार्मिक आड़ंबरों में विश्वास -

दलित समाज के लोग धर्म में विश्वास रखते हैं। वे अपना भाग्य भगवान के भरोसे छोड़ देते हैं। ये लोग यह नहीं सोचते कि जब तक अपनी प्रगति के विषय में खुद नहीं सोचेंगे तब तक कोई भगवान और किसी भी मंदिर का लाभ नहीं होगा।

'व्रत और व्रती' कहानी में धर्मपाल एक अभावग्रस्त युवक है। वह अपने कष्टों को दूर करने के लिए जन्माष्टमी के दिन भगवान श्रीकृष्ण का व्रत करता है। वह दिनभर उपवास करता है, परंतु दोपहर से उसकी तबीयत बिगड़ने लगती है। अत: वह रात को किसी तरह से पूजा करके खाना खाता है। मगर ज्यादा खाने से सब उबल पड़ता है। उसे रातभर खाली पेट सोना पड़ता है। अंत में वह दृढ़ संकल्प करता है कि - ''किसी देवता के नाम से उपवास या व्रत नहीं करेगा।''[9] उसे व्रत का कोई लाभ नहीं होता। उल्टे वह बीमार पड़ जाता है।

'मंदिर का लाभ' कहानी में एक राधा-कृष्ण का मंदिर बनवाया जाता है। परंतु मंदिर में मूर्ति की स्थापना करने के लिए कोई भी पुजारी नहीं आता। एक पुजारी आता है और सामान्य तरीके से पूजा करके मूर्ति की स्थापना करता है। कुछ दिन लोग पूजापाठ करने मंदिर में आते हैं। बाद में उस मंदिर में कोई नहीं जाता। वह मंदिर केवल एक वास्तु बनकर रह जाता है। समाज के लिए उसका कोई लाभ नहीं होता है। धर्म के नाम पर आड़ंबर और अंधी भक्ति समाज का उद्धार नहीं कर सकती। जप-तप, व्रत-उपवास हिंदू संस्कृति के अंग हैं। सभी का इनमें विश्वास है। परंतु आज दलित समाज में भी चेतना आ गई है। वे अब समझ गए हैं कि व्रत-उपवास से लाभ नहीं है बल्कि मेहनत करने की जरूरत है, वही पूजा है।

4.2 *नारी समस्याएँ -*

प्राचीन काल से नारी अनेक बंधनों में जकड़ी हुई है। हमारी पुरुष प्रधान संस्कृति ने उस पर अनेक बंधन थोपे हैं। एक ओर से उसे पूज्य माना गया, वहीं दूसरी ओर पुरुष ही उसका शोषण कर रहा है। स्त्री के लिए पति परमेश्वर रहा है। परंतु आज इन सभी बातों में परिवर्तन आए हैं। शिक्षा तथा आर्थिक निर्भरता के कारण नारी अपने अधिकारों के प्रति सचेत हो गई है। फिर भी आज कई समस्याएँ हैं। अछूत वर्ग की नारी को तो अनपढ़ तथा अज्ञानी होने के कारण आज भी नारकीय जीवन जीना पड़ रहा है। नारी को अपने परिवार तथा समाज के प्रति कई भूमिकाएँ निभानी हैं। जिस पर पूरे समाज का भविष्य निर्भर है। उसी को आज अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है।

''आज तक अशिक्षा के कारण नारी के जीवन के प्रति होनेवाला दृष्टिकोण अत्यंत सीमित था। अपने ऊपर होनेवाले अत्याचार एवं अन्याय को वह चुपचाप सहती थी। उसके जीवन की बागड़ोर उसके हाथ में नहीं थी, बल्कि वह पुरुषों की कठपुतली बनी हुई थी। अब उसे आत्मबोध हो गया है। .....उसने अब समझ लिया है कि जब तक अपनी गुलामी की जंजीरों को तोड़ने के लिए स्वयं स्त्री प्रयत्नशील नहीं होती तब तक यह गुलामी नष्ट नहीं होगी।''[10] परिणामस्वरूप वह विद्रोह कर उठी है।

सुशीला जी ने अपनी कहानियों में नारी समस्याओं का भी चित्रण किया है। उनकी कहानियों में नारी समस्याएँ निम्नप्रकार हैं -

4.2.1 *आशंकाओं से ग्रस्त नारी -*

हमारे देश में संस्कृति को श्रेष्ठ माना है। माँ-बाप अपने बच्चों को चरित्रवान बने रहने के दृढ़ विचार सिखाते हैं। वे बेटी को कर्तव्य और त्याग की तथा सांस्कृतिक मूल्यों को अक्षुण्ण बनाए रखने की शिक्षा देते हुए बिदा करते हैं। बेटी भी सुसंस्कृत, पढ़ी-लिखी होकर अपने पारंपारिक संस्कारों का पालन करती है। वह स्त्री-पुरुष समानता तो चाहती है, परंतु संस्कृति की मर्यादा भी तोड़ना नहीं चाहती। समाज की दृष्टि में स्त्री की सामाजिक मर्यादा कांच की तरह होती हैं। भारतीय

स्त्री पतिव्रता का धर्म ही श्रेष्ठ मानती हैं। पति के अलावा वह किसी दूसरे पुरुष की इच्छा मात्र से ही डरती है। सुशीला जी की कुछ कहानियों में इसका चित्रण मिलता है।

'कैसे कहूँ' कहानी की कुसुमांजली एक साहित्यकार है। उसको एक पाठक का प्रेमपत्र आता है। ''प्रिय कुसुमांजली.... मैं तुम्हारी प्रतीक्षा करने लगा हूँ ....।''[11] व्यक्ति पहली बार प्रेम का जो अनुभव करता है, उसी अनुभव के आधार पर वह अपनी कल्पना में अपनी प्रेयसी के विचारों की कल्पना करता है। इसी रूप में प्रेमपत्र लिखा था। कुसुमांजली बहुत चिंतित होती है। वह प्रेमी की आशंका मात्र से ही डरती है। वह सोचती है - ''परिवार की मान-मर्यादा, माता-पिता के दिए हुए संस्कार, पति का विश्वास, बच्चों के समक्ष अपने चरित्र की छाप सब कुछ पलभर में धूल-धूसरित हो जाएँगे। तब मेरे पास क्या होगा- चरित्रहीन होने की बात नहीं यह तो मेरे लिए अपमान की बात है।''[12] वह अपने मन की बात किसी को नहीं बता सकती। अपने पति को कहने से भी डरती है। क्योंकि वह एक भारतीय परिवेश में रहनेवाली सामान्य स्त्री है, वह किसी की पत्नी है, माँ है। कुसुमांजली केवल आशंकाओं से ही डरती है। लेखिका ने कुसुमांजली के माध्यम से आदर्श पतिव्रता भारतीय नारी का चित्रण किया है।

4.2.2 कुंठाग्रस्त नारी -

सुशीला जी की कहानियों में जिस प्रकार नारी का परंपरागत तथा शिक्षित रूप मिलता है, उसी प्रकार उनकी कुछ कहानियों में ऐसे नारी पात्र भी हैं, जो कुंठाओं, पीड़ाओं, अतृप्त आकांक्षाओं से पीड़ित है। सुशीला जी ने भारतीय नारी के मन का चित्रण किया है।

'हमारी सेल्मा' कहानी की सेल्मा एक कुंठाग्रस्त नारी है, जो निरंतर अकेली व मौन रहती है। सेल्मा के जीवन में शायद कोई घटना जरूर घटी है, जिसके प्रभावस्वरूप वह हमेशा कुंठाग्रस्त नजर आती है। पति के साथ उसकी बनती नहीं है। न जाने पति के कौन-से कठोर व्यवहार ने उसके मन में असमझौते की ग्रंथी डाल दी है। इसी कारण वह कुंठाग्रस्त है। वह घर का सारा काम चुपचाप करती है और हमेशा मौन ही रहती है। पड़ोसियों के साथ भी उसकी बनती नहीं है। सेल्मा अकेली ही रहती है।

इस प्रकार सुशीला जी ने कुंठाग्रस्त नारी के रूप में सेल्मा का चित्रण किया है।

4.2.3 रूढ़ीवादी नारी -

भारतीय नारी कितनी भी पढ़ी-लिखी क्यों न हो, वह पाश्चात्य विचारों की क्यों न हो, उसके मन में भारतीय संस्कार अवश्य छिपे रहते हैं। सामाजिक प्रतिष्ठा, नैतिक मूल्य तथा पारिवारिक जिम्मेदारियों का डर आज भी भारतीय नारी के मन और मस्तिष्क के किसी कोने में छिपा बैठा है। ये सभी डर नारी के मन-नस्तिष्क में कुंड़ली मारकर बैठे हैं, जो पीढ़ी-दर-पीढ़ी नारी हृदय में स्थानांतरित होते जा रहे हैं। जिन्हें समाज लक्ष्मण रेखा की तरह नारी के आस-पास सीमा रेखा के रूप में खींचता आया है। इस निश्चित कटघरे के बीच रहनेवाली नारी कब इतना साहस करेगी कि वह अपनी बात अपने ढंग से कह सकें। वह अपने प्रेम को पाप समझकर छिपाती रहेगी। पति कैसा भी हो, उसके साथ जीवन निभाती रहेगी। अपने दुख और संताप को आँसुओं के साथ बहाती रहेगी। नारी के इस परंपरावादी दृष्टिकोण का लेखिका ने अच्छी तरह से चित्रण किया है।

'सारंग तेरी याद में' कहानी की सौदामिनी राजदीप से प्रेम करती है। परंतु उसकी शादी किसी और से होती है। सौदामिनी अपने मन की बात किसी को भी नहीं बता सकती। क्योंकि नारी के धर्म और कर्तव्य के रूप में भारतीय संस्कृति की धरोहर सौदामिनी के आंचल में बांध दी है। वह सामाजिक मर्यादा तथा बंधनों में बंध चुकी है। वह अपने पति के साथ रहती है, परंतु उसके मन में छिपी पहले प्रेम की चाहत मौजूद रहती है। वह सब कुछ चुपचाप सहन करती है। सौदामिनी अपने मन की बात राजकुमारी के माध्यम से बताने का प्रयास करती है। परंतु उसमें भी वह असफल ही रहती है। वह सोचती है - ''यदि कोई ऐसी परिस्थिति आई तो वह तटस्थ, गंभीर और मौन रहकर अपने अहं और अस्तित्व को बनाए रखेगी, अपने परंपरावादी संस्कारों की रक्षा करेगी।''[13] क्योंकि भारतीय संस्कृति के अनुसार प्रेम कोई पाप नहीं है, लेकिन सामाजिक बंधनों के आगे नारी विवश है। एक बार जिस किसी से बंध जाती है उसी के साथ रहना पड़ता है।

4.2.4 नारी अहं की समस्या -

हर इन्सान में अहं, कुंठा, निराशा, पलायन, मौन विद्रोह व्याप्त होता है। भले ही हम दावे के साथ अपने स्वभाव में इन सबको नकारते रहे, लेकिन निरीक्षण करने पर हम जरूर पाते हैं कि कहीं हममें भी यह सब मौजूद है, जो हमें संचालित करते हैं। नारी में व्यक्तिवाद के यह सभी भाव और विचार मौजूद होते हैं। नारी में अहंभाव ज्यादा होता है। अहं से ग्रस्त नारी को भी आखिर समझौता करना ही पड़ता है। बचपन का जिद्दी स्वभाव आगे चलकर दृढ़ निश्चय और दृढ़ इच्छाशक्ति में विकसित होता है। लेकिन कभी-कभी अपरिपक्व उम्र की जिद हानिकारक भी सिद्ध होती है। उसे अपनी गलती मानने के लिए मन कभी भी तैयार नहीं होता है। जब तक तर्क-विवेक-बुद्धि को सही मार्ग दिखाते हैं, तब समय के साथ समझौता करना भी सिख लिया जाता है।

'हमारी सेल्मा' कहानी की सेल्मा में अहंभाव ज्यादा है, जिसके कारण वह सामंजस्य का भाव नहीं रख पाती है। सेल्मा मोहल्ले के किसी भी सदस्य से बातें नहीं करती। अपने पति, बेटे और बहू के साथ रहकर भी अकेलेपन से घिरी रहती है। छोटे-छोटे बच्चों की गलती पर उनके माँ-बाप से झगड़ती है। पति के साथ उसकी बनती नहीं है। वह हमेशा अंतर्मुखी रहती है। पता नहीं है उसके जीवन में कौन-सी घटना घटी है, जिसके कारण वह कुंठाग्रस्त होकर अकेली रहती है। वह घर में भी किसी से बातें नहीं करती। बचपन का उसका जिद्दी स्वभाव किसी भी प्रकार का समझौता करने में असमर्थ है। इस कहानी में उसे एक अहंकारी नारी के रूप में दिखाया है।

इस प्रकार लेखिका ने नारी के अहं का चित्रण किया है।

4.2.5 नारी मन का अंतर्द्वंद्व -

आज की नारी स्वतंत्र होते हुए भी परंपराओं में जकड़ी हुई है। वह शिक्षित और स्वतंत्र होते हुए भी आधुनिक, अधिकारसंपन्न नारी के रूप में स्वयं को बदल नहीं पाती है। वह सामाजिक मर्यादाओं का उल्लंघन नहीं करती। परंपराओं से चले आए संस्कार या मर्यादाओं को नहीं छोड़ सकती। इसी कारण वह किसी भी बात का विरोध करने में स्वयं को असमर्थ पाती है। वह किसी दूसरे का सहारा लेकर जीती है। वह केवल सपनों में ही सुख देखती है। यथार्थ में उसे टूटन नजर

आती है। उसके मन में सामाजक मर्यादाओं का भय छिपा रहता है। निरर्थक लादे गए आदर्श उसे हर निर्णय लेने में अक्षम बनाते हैं।

आज के वैज्ञानिक युग में व्यवस्था माध्यम बदले हैं, परंतु स्त्री की स्थिति वैसी ही है। वह अपने ऊपर होते अन्याय-अत्याचार चुपचाप सहन करती है। अपने सुंदर भविष्य की अपेक्षा परंपरागत, रूढ़ विचार उसे आगे बढ़ने नहीं देते। परंपरा तथा रूढ़िवादी विचारों से ग्रस्त नारी को अपने मन की बातें दूसरों के सामने बताने की हिम्मत नहीं होती है। उसे अपने मन की बातें बताने के लिए किसी माध्यम का सहारा लेना पड़ता है। सुशीला जी ने नारी के इस अंतर्द्वंद्व का चित्रण अपनी कहानियों में किया है।

'सारंग तेरी याद में' प्रतीकात्मक कहानी है। इसमें सौदामिनी अपने अंतर्मन की छटपटाहट नानी की कहानी की राजकुमारी के माध्यम से बताती है। वह राजदीप से प्रेम करती है। परंतु उसके जीवन में कोई दूसरा आता है। वह बहुत निराश होती है। परंतु उसके मन में इस प्रेम की चाहत मौजूद रहती है। वह नानी की कहानी में राजकुमार और राजकुमारी को मिलाना चाहती है, मगर यह संभव नहीं है। क्योंकि वे दोनों अब सामाजिक बंधन में बंध चुके हैं। उनका यह सुख केवल सामाजिक दिखावे का है। सौदामिनी सामाजिक, नैतिक मूल्यों के प्रति आस्था, कर्तव्यनिष्ठा, त्याग और सहनशीलता के कारण अपने मन की बात बताने में असफल होती है। धर्म और कर्तव्य के रूप में वह जो स्थिति है, उसे अपनाती है। वह अपने प्रेम के सामने कर्तव्य को महत्त्व देती है।

'त्रिशूल' कहानी की रेणु भी शादी के पहले किसी से प्रेम करती है। परंतु विवाह नहीं हो पाया था। दोनों का प्रेम उनके मन में ही रह जाता है। यही प्रेम की लालसा रेणु के अचेतन मस्तिष्क में रहती है और स्वप्न के रूप में उभरती है।

अत: हम समझते हैं कि हम किसी बात को भूल गए हैं। लेकिन वह बात हमारे अचेतन मस्तिष्क में रहती है।

4.2.6 कामकाजी नारी की समस्या -

मानव गतिशील है। उसमें समय-समय पर परिवर्तन आता है। नारी का इतिहास, उसके जीवन की विविध समस्याएँ आदिकाल से समाज में उसकी अवस्था में विकास, सांस्कृतिक

विकास में उसका मूल्य आदि का यथार्थ रूप से ज्ञान प्राप्त करने के लिए हमें अतीत पर दृष्टि रखनी आवश्यक होती है। सदियों से लेकर आज तक हमारे समाज से जुड़ी हुई यह एक ऐसी समस्या है, जिसका महत्त्व कभी गौण नहीं हुआ है। समाजशास्त्रीय अध्ययन आरंभ होने के पूर्व से सभ्यता की वर्तमान अवस्था तक नारी से संबंधित प्रत्येक संदर्भ से उभरकर यह समस्या विशिष्ट महत्त्व धारण किए हुए है।

आज नारी शिक्षित बन चुकी है। अच्छा-बुरा खुद समझ सकती है। उस पर विचार कर सकती है और उसका हल ढूँढ़ने का प्रयास भी करती है। आज की नारी आर्थिक दृष्टि से स्वतंत्र है। वह किसी की दया पर निर्भर नहीं है। अतः आधुनिक युग में नारी से संबंधित एक नई समस्या को जन्म दिया है और वह है, 'कामकाजी नारी की समस्या'।

सुशीला जी स्वयं एक कामकाजी नारी है। कामकाजी नारियों के सुख-दुखों को उन्होंने करीब से देखा है, परखा है। परिणामस्वरूप उनकी कहानियों में कामकाजी नारियों के स्वरों की सच्चाई झलकती है।

'घर भी तो जाना है' कहानी की नायिका आशा एक कामकाजी नारी है। वह स्कूल में शिक्षिका है। उसकी बेटी के. जी. में पढ़ती है। उसे स्कूल में पहुँचाना पड़ता है। एक दिन बेटी को छोड़कर स्कूल पहुँचने में दो मिनट की देरी होती है, तो इंचार्ज महोदया की डाँट खानी पड़ती है। इंचार्ज महोदया कहती हैं - ''नहीं, नहीं, एक के साथ सब बदनाम होते हैं, जो 'लेट' आए उसे खुद लेट साइन करना चाहिए, जो नियम है, वह मानना चाहिए।''[14] आशा घर के सभी काम और सभी जिम्मेदारियों को संभालते थक जाती है।

'सही निर्णय' कहानी में भी कामकाजी नारी का चित्रण हुआ है। इसमें इंदु एक शिक्षिका और समाजसेविका है। नौकरी की भागदौड़ के कारण तथा अपनी बेटियों की जिम्मेदारीयों और पारिवारिक जिम्मेदारियों से वह बहुत परेशान होती है। यह सभी सँभालकर उसे नौकरी करनी पड़ती है।

इस प्रकार नारी को सामाजिक स्थिति के साथ पारिवारिक समरसता बनाए रखने में अनेक बिकट परिस्थितियों और संघर्षों का सामना करना पड़ता है। फिर भी समाज में विशेषकर पुरुष वर्ग उसका सही मूल्यांकन नहीं कर पाता है।

4.2.7 संत्रस्त नारी की समस्या -

आज की नारी शिक्षित, स्वतंत्र होने के कारण उसकी जिम्मेदारियाँ बढ़ गई हैं। अपनी गृहस्थी सँभालकर वह नौकरी कर रही है। घर का काम, बच्चों की देखभाल, उनको स्कूल पहुँचाना आदि सभी काम उसे करने पड़ते हैं। नौकरी पर वक्त पर न पहुँचने पर सुपरवायजर की बातें सुननी पड़ती हैं। यह सब काम करते-करते वह थक जाती है। इतनी जिम्मेदारियों का बोझ उठाना उसके लिए मुश्किल हो जाता है। सुशीला जी ने अपनी कुछ कहानियों में संत्रस्त नारी का चित्रण किया है।

'सही निर्णय' कहानी की इंदु एक शिक्षिका और समाजसेविका भी है। नौकरी की खुशी में झूमती-गाती इंदु शादी के बाद बहुत चिढ़-चिढ़ी बनती है। दो बेटियों की माँ बनने के साथ काम बहुत बढ़ जाते हैं। घर के काम के साथ ही बेटियों की देखभाल भी उसे करनी पड़ती है। साथ-ही-साथ नौकरी की भागदौड़ के कारण वह बहुत परेशान बनती है। अपनी जिम्मेदारियों के बोझ से दबी इंदु पति को उसकी गैरजिम्मेदारियों के लिए दो-चार बातें सुनाती हैं। उनके झगड़े हमेशा घर का काम या बेटियों को सँभालने हेतु ही होते हैं। पति का सहयोग उसे अधिक नहीं मिलता है। इंदु अपनी बेटियों को पड़ोसियों के घर छोड़कर स्कूल जाती थी। कई बार उसे अनेक परेशानियों का सामना करना पड़ता है। इसी बीच तीसरे बच्चे ने आने का संकेत दिया। इंदु आगबबूला हो उठती है। वह कहती है - ''नहीं चाहिए अब मुझे कोई बच्चा, ... न कोई देखनेवाला है, न सँभालनेवाला। न कोई घर के काम में मदद करता है और न ही बाहर के काम में ..... सारी जिम्मेदारी मेरे ही ऊपर है - फिर मैं क्यों उठाऊँ अधिक बच्चों की जिम्मेदारी ?''[15] नौकरी के भागदौड़ के साथ महंगाई की मार का भी डर था। इसलिए इंदु फेमिली प्लानिंग का ऑपरेशन करवाती है।

इस प्रकार अपनी जिम्मेदारी और परेशानियों से त्रस्त नारी का चित्रण लेखिका ने बहुत अच्छे ढंग से किया है।

4.2.8 निर्णय क्षमता का अभाव -

नारी अगर जिंदगी में सही निर्णय लेने में चूक जाती है, तो उसे जीवनभर पश्चाताप के अलावा कुछ नहीं मिलता है। वह कभी-कभी योग्य निर्णय लेने में असमर्थ होती है, तो उसके जीवन का उद्देश्य ही क्या है ? इसका चित्रण सुशीला जी ने किया है।

'प्रतीक्षा' कहानी की सुमन एक पढ़ी-लिखी शिक्षित नारी है। वह प्रकाश से बहुत प्रेम करती है। परंतु प्रकाश इन सभी बातों से अनजान रहता है। वह शहर छोड़कर दूर जाता है। सुमन यह मानती है कि प्रकाश भी उससे प्रेम करता है। इसी कारण वह उसकी प्रतीक्षा में जीवन बीताती है। अन्य किसी व्यक्ति से विवाह के संबंध में विरोध करते हुए माता-पिता की इच्छा को वह तोड़ती रहती है और अविवाहित रहकर मन-ही-मन प्रकाश की प्रतीक्षा करती है। वह अपने गाँव से दूर किसी शहर में नौकरी करती है। वह युवती से प्रौढ़ा बनती है, लेकिन प्रतीक्षा का भाव बना रहता है। प्रकाश कुछ दिन पश्चात् तबादले के बाद उसी शहर में आता है, जहाँ सुमन नौकरी करती है। प्रकाश अब शादीशुदा है। प्रकाश की गृहस्थी की हरी-भरी बगिया देखकर सुमन को अपना जीवन एक वीरान रेगिस्तान की तरह लगता है।

इस प्रकार नारी गलत निर्णय से पश्चाताप के अधीन होती है।

4.2.9 प्रेम की समस्या -

प्रेम एक व्यापक परिकल्पना है। एक-दूसरे के प्रति प्रेम का आकर्षण जात-पात, समाज का विरोध सभी को लांघकर विवाह के पवित्र बंधन में बांध देता है। विवाहपूर्व प्रेम में जिम्मेदारी का भाव कम और उन्मुक्तता अधिक दिखाई देती है। उन्मुक्त प्रेम करनेवाले प्रेमी केवल सौंदर्य और यौवन से प्रेम करते हैं, उनमें हार्दिक प्रेम नहीं होता है। ऐसा प्रेम पारिवारिक स्वास्थ्य के लिए विघातक होता है। धर्म-जाति तथा धन के दंभ के संबंध में भारतीय समाज में रूढ़िवादीता बहुत बड़े पैमाने पर है। ऐसी स्थिति में धर्म-जाति-पाति तथा श्रेणी-भिन्नता का विचार न करनेवाले युवक-युवतियों के जीवन में समस्या पैदा करता है।

वर्तमान समय की बदलती परिस्थितियों के कारण आज परंपरागत दांपत्य-जीवन के आदर्शों में दरारें पड़ रही हैं। पति-पत्नी के संघर्षशील संबंधों के कारण आपसी प्रेम और निष्ठा की भावना धीरे-धीरे नष्ट हो रही है। आज प्रेम का स्वरूप बदला हुआ दिखाई देता है। सुशीला जी ने प्रेम समस्या का भी चित्रण किया है।

'सारंग तेरी याद में' कहानी में सौदामिनी राजदीप से प्रेम करती है। परंतु उसकी शादी किसी दूसरे के साथ होती है। वह अपने संस्कारों के अनुसार पति के साथ ही एकनिष्ठ रहती है। राजदीप को वह भूल जाती है।

'धूप से भी बड़ा' कहानी में बंटी और रोमा एक-दूसरे से बहुत प्रेम करते हैं। दोनों शादी करते हैं। परंतु शादी के बाद बंटी शराब पीने लगता है। वह रोमा को मारपीट भी करता है। रोमा उसे सुधारने का बहुत प्रयास करती है, परंतु बंटी की बुरी आदतें नहीं बदलती हैं। आखिर रोमा बंटी को तलाक देकर सुनील से शादी करती है।

4.3 सामाजिक समस्याएँ -

समाज एक व्यापक संकल्पना है। व्यक्ति इसकी लघुत्तम इकाई है। "समाज समूह से निर्मित विशिष्ट उद्देश्य से बनाई गई संस्था है। इस समाज का उद्देश्य व्यक्ति समाज की रक्षा उन्नयन और हित है।"[16] परंतु हम देखते हैं कि समाज में विभिन्न जाति, वर्ग के लोग रहते हैं। इन सभी में आज भारी विद्वेष दिखाई देता है। परिणामस्वरूप अनेक समस्याएँ निर्माण हो चुकी हैं।

सुशीला जी ने अपनी कहानियों में दलित समस्याएँ और नारी समस्याओं के साथ-साथ सामाजिक समस्याओं का भी चित्रण किया है। उनकी कहानियों में सामाजिक समस्याएँ निम्न प्रकार से हैं -

4.3.1 अकेलेपन की समस्या -

अकेलेपन की समस्या आधुनिक युग की अत्यधिक गंभीर समस्या है। परिस्थिति के दबाब में आकर व्यक्ति में घुटन-सी पैदा होती है। मानव-जीवन की सबसे बड़ी त्रासदी यह है कि व्यक्ति जीवन में अकेला हो जाता है। मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। समाज में रहते हुए तथा अपने

सगे संबंधियों के होते हुए भी मानसिक तनाव के कारण मनुष्य कभी-कभी अकेलापन महसूस करता है। यह घुटन और अकेलेपन की समस्या सुशीला जी की कहानियों में मिलती है।

'हमारी सेल्मा' कहानी की सेल्मा अकेलेपन से ग्रस्त नारी है। वह अपने घर के सभी लोगों के साथ रहकर भी अकेली ही रहती है। सेल्मा कभी भी सामंजस्य का भाव नहीं रखती है। वह अपने मोहल्ले के किसी भी परिवार के सदस्य से बातें नहीं करती है। उसके जीवन में कोई घटना घटी है, जिसके कारण वह हमेशा अकेली और मौन रहती है। सबके बीच रहकर भी उसका मौन टूटता नहीं है। वह हर समय चूप ही रहती है। ''धूप से दूर, कमरे में बंद, बिना किसी से बात किए कोई इन्सान कब तक चुप रह सकता है ? किंतु वह अब भी चुप है। कई बरसों से चुप है, बेटे के साथ रहकर भी निर्विकार, पति के साथ रहकर भी अकेली, मौन और अंतर्मुखी है।''[17] इस प्रकार सेल्मा हमेशा अकेलेपन से घिरी रहती है।

'दिल की लगी' कहानी की शफिया मौसी भी अकेलेपन से ग्रस्त नारी है। पति के साथ उसकी बनती नहीं है। वह पति से अलग रहती है। परंतु वह अपना अकेलापन दूर करने के लिए हर रिश्तेदार से मिलने जाती है।

4.3.2 अविश्वास की समस्या -

किसी भी क्षेत्र में विश्वास का होना महत्त्वपूर्ण होता है। आज आपसी विश्वास कम होता जा रहा है। भारतीय परंपरा में प्रेम और विश्वास को महत्त्वपूर्ण स्थान है। परंतु उसकी जगह झूठ और फरेब ने ली है। सुशीला जी ने अविश्वास की समस्या का भी चित्रण किया है।

'नयी राह की खोज' कहानी में रामचंद की छोटी बहन बुधिया का बेटा मैट्रिक तक पढ़ा है। मैट्रिक के बाद एक-दो साल पोलिटेक्निक भी पढ़ता है। लेकिन अर्थाभाव के कारण बुधिया अपने बेटे कमल को आगे नहीं पढ़ा सकती। अत: वह बेरोजगार रहने के कारण बुधिया बहुत परेशान होती है। उसकी परेशानी और जरूरत को देखकर एक आदमी उसे विश्वास दिलाता है कि - ''मुझे दस हजार रुपये दो; बम्बई में मेरी बहुत पहचान है, मैं तुम्हारे बेटे को बाबू की नौकरी लगवा दूँगा।''[18] परेशान बुधिया और निराश कमल उस पर विश्वास करते हैं। अपने सभी गहने बेचकर और कुछ

उधार लेकर बुधिया दस हजार रुपये इकठ्ठा करती है और उस अनजान व्यक्ति को दे देती है। वह आदमी झूठा पता देकर गायब हो जाता है।

'टूटता वहम' कहानी में शर्मा जी लेखिका के पति के सहयोगी शिक्षक हैं। परंतु वे जातिभेद माननेवाले हैं। लेखिका को एक प्लाट खरीदना था, परंतु उनके पास इतने पैसे नहीं थे। बाद में शर्मा जी और लेखिका के पति दोनों मिलकर प्लाट खरीदने का निर्णय करते हैं। परंतु शर्मा जी नहीं चाहते कि वे किसी निम्न वर्ग के पड़ोस में रहें। इसी कारण शर्मा जी इस बात को टालते रहते हैं। वह प्लाट दूसरा कोई खरीद लेता है। लेखिका और उनके पति शर्मा पर निर्भर रहते हैं। इस प्रकार शर्मा जी अविश्वासी हैं।

4.3.3 पारिवारिक समस्या -

आज बदलती हुई परिस्थितियों के कारण पारिवारिक जीवन में विश्रृंखलता आई है। अब यह स्थिति दिखाई देती है कि व्यक्तिगत सुख के आगे परिवार के कोई भी रिश्ते-नाते महत्त्व नहीं रखते हैं। पारिवारिक जीवन में एक बिखराव-सा आ गया है। स्वाधीनता के पश्चात् भारत में नई अर्थव्यवस्था का उदय हुआ, जिसके कारण संयुक्त परिवार संस्था में दरारें पड़ गई हैं। आज स्वतंत्र विचारों की युवा पीढ़ी परिवार के बुजुर्गों का सम्मान नहीं कर रही हैं। इसी कारण परिवार में तनाव की स्थिति आ गई है। आज संघर्ष के कारण परिवार अलग होते जा रहे हैं। कहीं आर्थिक कारण है, कहीं पति-पत्नी में तणाव है। इसके साथ-ही-साथ माता-पिता, पिता-पुत्र, सास-बहू, ननद-भाभी आदि रिश्तों में भी संघर्ष दिखाई देता है।

'गलती किसकी है' कहानी में इस समस्या का चित्रण है। इस कहानी में अनीता और सुनीता दोनों सगी बहनें हैं। उनकी शादी एक ही घर में दो सगे भाइयों से होती है। दोनों अलग-अलग क्वार्टर में रहती हैं। अनीता बड़ी जेठानी होने से सुनीता पर रोब जमाती है। सुनीता समझदार होने के कारण उसे कुछ नहीं कहती। अनीता के तीन लड़के हैं। मगर उन पर अच्छे संस्कार नहीं होते हैं। तीनों आवारागर्दी करते घूमते रहते हैं। सुनीता की तीनों लड़कियाँ बहुत होशियार हैं, वे तीनों

नौकरी करने लगती हैं। इस प्रकार एक ही परिवार में रहकर भी बच्चों के आचरण में इतना फर्क होता है।

4.3.4 रिश्तों में टूटन -

आधुनिक युग में व्यक्ति-व्यक्ति के बीच एक अलगाव, अजनबीपन बढ़ता जा रहा है, जिसका प्रभाव संबंधों पर पड़ा है। आज स्थिति यह है कि स्त्री-पुरुष, पति-पत्नी, माता-पिता, भाई-बहन, प्रेमी-प्रेमिका आदि के संबंधों का महत्त्व कम होता जा रहा है। आज शहरों में रहनेवाली, उच्चशिक्षा प्राप्त, व्यावहारिक ज्ञान से परिपूर्ण नौकरी करनेवाली बहनें रक्षाबंधन जैसे पारंपारिक त्यौहार को औपचारिक रूप से देखने लगी हैं। मायके जाकर अपने भाई का अपने हाथों से राखी बाँधने की अपेक्षा राखी को लिफाफे में रखकर भेजना ही अपना कर्तव्य समझ रही है। आज भाई-बहन के अटूट और पवित्र रिश्ते को औपचारिक रूप प्राप्त हो रहा है। इस रिश्ते में होनेवाला प्रेम, ममता और अपनत्त्व धीरे-धीरे कम होता जा रहा है। भाई भी बेरोजगारी और महंगाई की समस्याओं से जूझते हुए अपनी बहनों को सहयोग देने में असमर्थ पा रहे हैं।

'बंधी हुई राखी' कहानी में भाई-बहन के रिश्ते में औपचारिकता दिखाई है। नायिका स्वयं इस रिश्ते के प्रति तटस्थ रहती हैं। नौकरी के कारण वह रक्षाबंधन के त्यौहार पर अपने भाइयों को राखी बांधने मायके नहीं जाती। अपने भाइयों को लिफाफे से राखी भेजकर अपना कर्तव्य निभाती है। प्रत्येक बहन का कर्तव्य है कि वह रक्षाबंधन के दिन अपने भाइयों को अपने हाथों से राखी बांधे। परंतु आज की बहन पारिवारिक समस्या तथा नौकरी के कारण इस बात को अधिक महत्त्व नहीं देती है। लेखिका के सहयोगी शिक्षक हरीश त्रिवेदी उसे बहन मानते हैं । मगर वह इस नए भाई के प्यार, स्नेह, अनुभूति के प्रति तटस्थ रहती है।

इस प्रकार आज शहर की मशीनी जिंदगी में टूटन आई है।

4.3.5 एकतरफा प्रेम की समस्या -

प्रेम समस्या का ही एक रूप है, एकतरफा प्रेम। आज यह समस्या विकृत रूप धारण कर चुकी है। सच्चा प्रेम एक समस्या बन गई है। प्रतीक्षा तो दोनों ओर से जुड़ी रहती है। अगर एक

प्रतीक्षा करता है और दूसरा इससे अनजान हो तो प्रतीक्षा व्यर्थ होती है। सुशीला जी ने 'प्रतीक्षा' कहानी में एकतरफा प्रेम की समस्या का चित्रण किया है।

'प्रतीक्षा' कहानी की सुमन एक शिक्षित और सुसंस्कृत नारी है। वह ऑफिस में नौकरी करती है। सुमन और प्रकाश एक सामाजिक समारोह में मिलते हैं। प्रकाश का हँसना, उसकी तरफ आत्मीय भाव से देखना और मुस्कुराना आदि देख सुमन के मन में उसके प्रति प्रेम का भाव उदित होता है। वह यह समझकर चलती है कि प्रकाश भी उसे पसंद करता है। वह मन-ही-मन प्रकाश की प्रतीक्षा करती है। परंतु प्रकाश इन सभी बातों से अनजान रहता है। वह दूसरे शहर में नौकरी करने चला जाता है। सुमन अविवाहित रहकर प्रकाश की प्रतीक्षा करते-करते प्रौढ़ा हो जाती है। प्रकाश ने उसके प्रति प्रेम प्रकट नहीं किया था। वह शादी करके अपनी गृहस्थी बसाता है। इस बात का पता सुमन को चलता है तो उसे बहुत पछतावा होता है। वह तर्क-वितर्क में स्वयं को तौलती है - ''क्या उसने गलती की है ? एकतरफा प्रेम की मृगमरीचिका के पीछे भागती रही, शून्य में सुख ढूँढ़ती रही..... और अब उसके सामने क्या शेष रहा है ? जीवन का उद्देश्य क्या रह गया है ?''[19]

4.3.6 बेटा-बेटी भेद -

आज के वैज्ञानिक युग में बेटा और बेटी को समान मानना आवश्यक है। दोनों को समान अवसर और सुविधाएँ मिलनी चाहिए। यह भी आवश्यक है कि महिलाएँ अपने अधिकार के लिए समाज से संघर्ष करें। आज भी बेटा और बेटी में भेद किया जाता है। माँ-बाप शिक्षित होकर भी दोनों में भेद करते हैं। अपने कुलदीपक के रूप में बेटे को ही महत्त्व दिया जाता है। सुशीला जी ने इस समस्या का भी चित्रण किया है।

'सही निर्णय' कहानी में इंदु एक शिक्षिका है। उसकी दो बेटियाँ हैं। उनकी जिम्मेदारी और घर की जिम्मेदारियों से वह बहुत परेशान होती है। तीसरी बार वह पाँच महिने का गर्भपात करवाती है। वह लड़का था यह जानकर उसे बहुत पछतावा होता है। वह कहती है - ''हाय, उसने यह क्या किया। अपने पति के कुलदीपक को अपने हाथों बुझा दिया।''[20] इंदु बेटा न होने का दुख भूल

नहीं पाती। उसका मन हमेशा कचोटता रहता है। एक हताश कुंठा उसके दिल पे छाई रहती है कि वह बेटे की माँ नहीं बन सकी।

'गलती किसीकी है' कहानी में अनीता के तीन बेटे हैं और सुनीता की तीन बेटियाँ। अनीता को तीन बेटे होने का बहुत गर्व है। वह अपने बेटों पर बहुत खर्च करती है, लेकिन उन पर अच्छे संस्कार करना भूल जाती है। अनीता और उसका पति सुनीता की बेटियों को हमेशा कोसते रहते हैं। सुनीता की तीनों बेटियाँ खूब पढ़-लिखकर नौकरी करती हैं। अनीता के बेटे आवारा फिरते रहते हैं।

इस प्रकार बेटियाँ भी खूब पढ़-लिखकर ऊँचे स्थान पर पहुँच रही हैं। परंतु आज भी बेटा-बेटी में फर्क किया जाता है।

4.3.7 सामाजिक रूढ़ियों और नैतिक मूल्यों की समस्या -

सामाजिक रूढ़ियों और नैतिक मूल्य व्यक्ति को इतना बांध देते हैं कि व्यक्ति संस्कारों के कारण चाहकर भी अपने मन का काम नहीं कर पाता है। इसके लिए वह कई बार पहेलियों और प्रतीकों का सहारा लेकर अपने मन की बात करता है। क्योंकि सामाजिकता चरित्र को महत्त्व देती है। व्यक्ति मन-ही-मन अनेक कल्पना करके अपने मन को बहलाता है और अंत तक अतृप्त ही रहता है।

'सारंग तेरी याद में' कहानी की सौदामिनी एक ऐसी नारी है, जो अपने जीवन में प्रेमी और पति का प्रेम नहीं पा सकी है। वह किसी राजदीप से प्रेम करती है, परंतु उसकी शादी दूसरे के साथ हुई है। वह अपने मन का दुख किसी को बता नहीं सकती। वह 'नानी की कहानी की राजकुमारी' के माध्यम से अपने मन की बात बताने का प्रयास करती है। मगर उसमें भी असफल रहती है। राजकुमारी का दुख सौदामिनी का दुख है। इस दुख का कारण प्रेम की अतृप्ति और समाज की रूढ़ियाँ हैं। वह प्रेमी और पति का सुख नहीं पा सकती है। वह केवल कल्पना में ही सुख ढूँढ़ती है, परंतु यथार्थ में वह सुखी नहीं है।

इस प्रकार सामाजिक प्रतिष्ठा या रूढ़ियाँ व्यक्ति को दोहरा जीवन जीने के लिए विवश करती हैं।

निष्कर्ष -

सुशीला टाकभौरे आधुनिक युग की लेखिका हैं। उन्होंने अपनी कहानियों में दलितों पर होनेवाले अन्याय और अत्याचार को वाणी देने का प्रयास किया है। सुशीला जी स्वयं दलित होने के कारण दलितों का दुख, दर्द, पीड़ा और वेदना को उन्होंने स्वयं महसूस किया है। इसीलिए उन्होंने अपनी कहानियों में दलितों की पीड़ा, वेदना का चित्रण किया है। उनके लेखन-विषय का केंद्र दलित समाज और नारी है। उन्होंने दलित समस्याओं के अंतर्गत छुआछूत, अशिक्षा, शोषण, जातिभेद, धार्मिक आड़ंबरों एवं नारी समस्याओं के अंतर्गत नारी मन का अंतर्द्वंद्व, अहंभाव, कुंठाभाव और कामकाजी नारी की समस्याओं का चित्रण किया है। साथ ही कुछ सामाजिक समस्याओं को भी उठाया है।

सुशीला जी ने दलितों को अन्याय और शोषण के खिलाफ संघर्ष करने के लिए प्रेरित किया है। साथ ही उनमें विश्वास तथा आगे बढ़ने का साहस पैदा करने की कोशिश की है। उन्होंने दलितों के मन में नई चेतना, परिवर्तनवादी विचार तथा क्रांति की भावना जगाने का प्रयास किया है। सुशीला जी दलित समाज के लोगों को उनके सीमित दायरे से बाहर लाकर इस समाज की बुराइयाँ मिटाकर उन्हें नई दृष्टि देना चाहती है। अत: उनकी रचनाएँ दलित जीवन में जड़ जमाएँ रूढ़ियों और कुरीतियों का पर्दाफाश करने की भूमिका निभा रही हैं।

एक संवेदनशील नारी होने के कारण लेखिका ने नारी संवेदना का चित्रण अच्छी तरह से किया है। उन्होंने नारी के अंतर्मन की परते खोलने का प्रयास किया है। नारी शिक्षित और स्वतंत्र होते हुए भी परंपराओं से चले आए संस्कारों को नहीं छोड़ती है। वह स्त्री-पुरुष समानता तो चाहती है, लेकिन भारतीय संस्कृति की मर्यादा भी तोड़ना नहीं चाहती। वह पतिव्रत धर्म को ही श्रेष्ठ मानती है। नारी के पास निर्णयक्षमता का अभाव होता है। लेखिका ने नारी का आत्मविश्वास बढ़ाकर उन्हें

आत्मनिर्भर बनाने की कोशिश की है। उन्होंने नारी कुंठा और नारी के अहं का चित्रण भी बखूबी से किया है। नारी में अहंभाव होता है। परंतु वह अपने जीवन का पुनर्मूल्यांकन करने के लिए मजबूर हो जाती है कि अपने स्वभावगत गुण-दुर्गुणों के कारण वह क्या खोती है और क्या पाती है, इस पर भी दृष्टि डाल दी है। अंत में वह समझौता करने के लिए किस प्रकार विवश होती है, इसे भी दर्शाने का प्रयास किया है।

आज के वैज्ञानिक युग में स्त्री और पुरुष का भेद मिट गया है। परंतु बीसवीं शताब्दी खत्म हुई और आज भी बेटे को ही महत्त्व दिया जाता है। वह जमाना कब का बीत चुका जब बेटा ही कुलदीपक कहलाता था। आज दोनों में फर्क नहीं किया जाता। यदि बेटियाँ ही हैं तो उन्हें खूब पढ़ा-लिखाकर बहुत ऊँचाई तक पहुँचाया जाता है। आज की शिक्षित नारी को समाज की नासमझ महिलाओं में विकास और प्रगतिशीलता की भावना को जगाना आवश्यक है। सुशीला जी ने अपनी कहानियों में नारी शिक्षा को महत्त्व दिया है। वह समाज में स्त्री-पुरुष समानता चाहती है।

स्पष्ट है कि लेखिका ने समाज में व्याप्त अनेक समस्याओं का सफल चित्रण किया है। खास कर दलितों की समस्याओं का चित्रण और उन समस्याओं के समाधान भी प्रस्तुत किए हैं।

संदर्भ सूची

1. डॉ. सुशीला टाकभौरे, टूटता वहम, पृ. 11
2. वही, पृ. 37
3. वही, पृ. 62
4. डॉ. चंद्रकुमार वरठे, दलित साहित्य आंदोलन, पृ. 38
5. सुशीला टाकभौरे, टूटता वहम, पृ. 82
6. वही, पृ. 29
7. डॉ. बी. बी. मिश्र, दि इंडियन मिडिल क्लास, पृ. 2
8. डॉ. सुशीला टाकभौरे, टूटता वहम, पृ. 82
9. वही, पृ. 53
10. डॉ. उर्मिला प्रकाश, नारी नवजागरण और महिला उपन्यासकारों की स्त्री-पुरुष परिकल्पना, भूमिका से, (डॉ. ओमानंद सारस्वत), पृ. 7
11. डॉ. सुशीला टाकभौरे, अनुभूति के घेरे, पृ. 67
12. वही, पृ. 66
13. वही, पृ. 43
14. वही, पृ. 74
15. वही, पृ. 95
16. डॉ. पांडुरंग पाटील, देवेश ठाकुर और उनका उपन्यास साहित्य, पृ. 58
17. डॉ. सुशीला टाकभौरे, अनुभूति के घेरे, पृ. 53
18. डॉ. सुशीला टाकभौरे, टूटता वहम, पृ. 88
19. डॉ. सुशीला टाकभौरे, अनुभूति के घेरे, पृ. 63
20. वही, पृ. 95